E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

हरियाणा में जैन धर्म के प्रमुख स्थल

डॉ. जसमेर सिंह

सहायक प्रोफेसर, चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद ।

डॉ. सुरेश

सहायक प्रोफेसर, चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद ।

Paper Rcevied date

05/10/2025

Paper date Publishing Date

10/10/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.17486548

IMPACT FACTOR 5.924

शोध सार

जैन धर्म में जैन स्थलों का सम्बन्ध तीर्थंकरों और अन्य महान पुरुषों के जीवन की घटनाओं से सम्बन्धित है। इन स्थलों को कल्याणक क्षेत्र भी कहा जाता है और ऐसा माना जाता है कि इससे उन लोगों के मन में जो यात्रा के लिए जाते हैं। उनकी आत्म जाग्रति उत्पन्न होती है । जब जैन धर्म का पतन हुआ तो कुछ जैन तीर्थ स्थल भुला दिये गये और कुछ पर अन्य सम्प्रदायों ने उन पर अधिकार कर लिया । इस प्रकार से हरियाणा के जैन स्थल एक प्रकार से अपनी एक अलग पहचान रखते हैं। हरियाणा के जैन स्थलों का भारतीय इतिहास में एक विशिष्ट स्थान माना जाता है । (1)

हरियाणा में कई स्थानों पर पुरातात्त्विक कार्य हुए हैं तथा उत्खनन से जैन धर्म से सम्बन्धित अवशेष भी प्राप्त हुए है। कई स्थलों पर जैन धर्म से सम्बन्धित प्रतिमाएँ प्राप्त हुई है। जैसे सिरसा, जीन्द, रोहतक, हांसी, पिंजौर, रोहतक आदि ।

हरियाणा में जैन धर्म का प्रवेश राजस्थान राज्य से होने की अधिक संभावना मानी जाती है। जैन धर्म आरंभ में हरियाणा में राजस्थान के समवर्ती जिलों में फैला होगा। पिंजौर से प्राप्त संगमरमर. प्रतिमाओं से भी यह स्पष्ट होता है कि जो प्रतिमाएं पिंजौर से प्राप्त हुई हैं। वे संगमरमर की बनी हुई है । हरियाणा में कही भी संगमरमर पत्थर की प्राप्ति संभव नहीं हैं । इस प्रकार से स्पष्ट है कि हरियाणा में जैन धर्म राजस्थान से ही फैला होगा । हरियाणा के प्रमुख जैन स्थल निम्नलिखित है |

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

1.**सिरसा** :

हरियाणा में सिरसा जिले में प्राचीन समय से ही जैन धर्म का प्रभाव रहा था सिरसा में प्रसार निकटवर्ती राजस्थान प्रदेश से हुआ, जहाँ जैन धर्म बहुत पहले से ही स्थापित हो गया था।

सिरसा में जैन धर्म से सम्बन्धित प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। सिरसा उत्तरी भारत के प्राचीन नगरों में से एक है। "सिरसा" शब्द "शैशीषक" शब्द का अपभ्रंश रूप माना जाता है। इस क्षेत्र में शैरीषक वृक्ष की बहुलता रही थी इस कारण से इसका नाम शैशीषक नाम प्रसिद्ध हुआ । राजनैतिक दृष्टि से सिरसा कुरु जनपद में था। इस नगर को बसाने का श्रेय एक अज्ञात राजा सरस को भी दिया जाता है। आधुनिक समय में सिरसा जिले के पूर्व में हिसार, उत्तर में पंजाब प्रदेश, पश्चिम तथा दक्षिण में राजस्थान प्रदेश है । (2) **सिरसा से जैन धर्म की चार मूर्तियाँ मिली है। यहाँ से एक मूर्ति का आधार व इस पर खड़ी मूर्ति अलग-अलग निर्मित हुए थे ।** (3) **इस आधार पर सामने मध्य में आसन लटकता हुआ दिखाया गया है।**

उसके बीच में नीचे धर्म चक्र तथा हिरण तथा शेर अंकित है। पार्श्व के दाहिने हाथ में चक्र तथा दूसरा हाथ अभय मुद्रा में है। प्रतिमा (4) **पर अलंकृत वस्त्रासन बड़ी कुशलता से प्रदर्शित किये गये है। इस देवता के नीचे आधार के सम्मुख भाग में एक वक्र अंकित है। इसके पास में हिरण व शेर बैठे हुए है। इस मूर्ति में तीर्थंकर का विशेष चिह्न शंख दिखाया गया है।**

सिरसा के समीप ही सिकन्दरपुर से एक जैन मूर्ति मिली है। इस प्रतिमा में एक लघुकाय तीर्थकर का सिर है। इस प्रतिमा में तीर्थंकर की नाक, होंठ व आंखें क्षतिग्रस्त अवस्था में मिली है। (5) इस मूर्ति में जिन को सिर पर मुकुट पहने दिखाया गया है और वह पद्मासन-मुद्रा में स्थित है। इसके दोनों तरफ दो आकृतियाँ खडगासन मुद्रा में खड़ी है। इन आकृतियों में धोती पहन रखी है। वस्त्र पहने दिखलाये जाने से यह स्पष्ट है कि यह मूर्ति श्वेताम्बर सम्प्रदाय से सम्बन्धित है। इस मूर्ति में गुलाब जैसी आकृति बनी हुई है। (6)

जीन्द :

हरियाणा का दूसरा जिला जीन्द है। जो जैनधर्म से सम्बन्धित है। इस जिले के जीन्द शहर में ही जैन धर्म के प्रसार और प्रभाव की जानकारी प्राप्त जैन मूर्तियों से होती है। (7) जीन्द जिले से दो जैन तीर्थकरों की मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। (8) **पहली प्रतिमा वृषभनाथ (आदिनाथ) को पद्मासन मुद्रा में बैठे दिखाया गया है। इस प्रतिमा**

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

में उसके हाथ खंडित है। मूर्ति के इन शेरों के बीच में धर्म चक्र भी है। इस प्रतिमा में आदिनाथ के विशिष्ट चिन्ह बैल को भी दर्शाया गया है। इसमें कुछ सूक्ष्म जिन आकृतियाँ भी अंकित है। इस मूर्ति में तीन पंक्तियों का लेख भी है। (9) प्राप्त दोनों प्रतिमाओं में से केवल एक मूर्ति को ही उसके विशेष चिन्हों के आधार के आधार पर जैन धर्म के पहले तीर्थंकर ऋषभनाथ के रूप में पहचाना गया है। दूसरी प्रतिमा किसी तीर्थंकर की है। यह अभी निश्चित नहीं हो पाया है। पहली प्रतिभा में ऋषभनाथ पद्मासन मुद्रा में कमल पर बैठे हुए दिखलाए गए है। (10)

प्रतिमा में पीछे की तरफ प्रभामण्डल दर्शाया गया है। इसके निचले हिस्से में दो शेर भी दिखाए गए है। जिनके बीच में धर्मचक्र है। इस तीर्थंकर के दोनों तरफ भरत व बाहुबलि को त्रिभंग मुद्रा में खड़े हुए दिखाया गया है। दूसरी तीर्थंकर की प्रतिमा सम्पूर्ण नहीं हैं इसमें तीर्थंकर पद्मासन मुद्रा में बैठे है। इसके हाथ योगी की (11) मुद्रा में एक दूसरे हाथ के ऊपर रखे हुए दिखाए गए है। इस प्रतिमा में तीर्थंकर के बाल घुंघराले है। इसकी आंखें अधखुली हुई है।

कुरुक्षेत्र :

कुरुक्षेत्र

थानेश्वर कुरुक्षेत्र जिले के अंतर्गत भारत के अत्यन्त प्राचीन नगरों में से एक है। इसकी धार्मिक पवित्रता का वर्णन पौराणिक परम्पराओं में पर्याप्त मात्रा में मिलता है। कुरुक्षेत्र का शाब्दिक अर्थ कौरवों की भूमि से है। (12)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

थानेश्वर में हुए पुरातात्त्विक सर्वेक्षण तथा उत्खनन से अनेक धर्मों से सम्बन्धित अवशेष प्राप्त हुए हैं। जैन धर्म से सम्बन्धित कुरुक्षेत्र से एक विशाल तीर्थंकर सिर यहाँ से प्राप्त हुआ है। (13) यहाँ से एक मूर्ति प्राप्त हुई है। जो कि जैनधर्म से सम्बन्धित है। इस मूर्ति में तीर्थंकर को ध्यान मुद्रा में बैठे हुए प्रदर्शित किया गया है। इस मूर्ति में तीर्थंकर की नाक, होंठ व ठुडढी खंडित अवस्था में है। जैन आगमग्रंथों के अनुसार स्यूणा, जिसके पहचान थानेश्वर से की गई है। (14)

पिंजौर :

पिंजौर

उत्तरी-हरियाणा में जैन धर्म का प्रमुख केंद्र पिंजौर था। पिंजौर और इसके आस-पास के क्षेत्रों में पुरातात्त्विक अनुसंधान से यहाँ जैन मूर्तियों व स्मारकों के अवशेष प्राप्त होते हैं। यहाँ से जिनों की कुल 19 नग्न मूर्तियां मिली है।

जिसमें से 16 कबीर चौरा से तथा शेष पिंजौर सड़क पर स्थित रतापुर के नजदीक गोगापीर - टीले से प्राप्त हुई हैं। गोगापीर टीले से एक जैन तीर्थ है। पिंजौर से प्राप्त कलात्मक रचना में है। स्थान की उपस्थिति का आदिनाथ की मूर्तियों में भी आभास होता तीर्थंकर का सिर

जोकि सिर ऊपरी भाग 1 तथा 2 अन्य सिर रहित जो बैठी हुई मुद्रा में है। आदिनाथ की सिर सहित प्रतिमा में इनके सिर के घुंघराले बालों को कन्धों पर लटकते हुए दिखाया गया है। आदिनाथ की मूर्ति के ऊपर एक छत्र है और इस छत्र के ऊपर देवदुन्दुभि की आकृति है। इस छत्र के दोनों तरफ जिनों की आकृतियाँ हैं तथा इन छत्र का कुछ हिस्सा टूट गया है। (16)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

चोंकी के बीच एक बैलों का बैठे हुये दिखाया गया है। यह मूर्ति पूरी तरह से खंडित अवस्था में है। बैल आदिनाथ का विशिष्ट चिह्न है। इसी आधार पर इस मूर्ति का संबंध आदिनाथ से जोड़ा गया है। आदिनाथ की एक अन्य सिर रहित प्रतिमा में आदिनाथ को ध्यान मुद्रा में बैठे हुए दिखाया गया है। (17) नेमिनाथ की शीर्ष रहित में मूर्ति में इसको सिंहासन पर ध्यान मुद्रा में बेठे दिखाया गया है। इस मूर्ति के दोनों और यक्ष गणों की मूर्तियां भी है। तीर्थंकर की गद्दी के नीचे दो सिंह को पंजों पर एक-दूसरे के विपरीत दिशा में बैठे हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति के मध्य में चक्र है। जैनस्थल पिंजौर से ही एक ऐसी प्रतिमा मिली है। जिसमें तीर्थंकर को खड़े हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति के बाजू टूटे हुए है। (18) लेकिन कन्धे वास्तविक स्थिति में नीचे की ओर लटकते हुए दिखाए गए है । इसकी छाती पर श्री - वत्स चिह्न दिखाया गया है। इस मूर्ति में तीर्थंकर को धोती पहने दिखाया गया है और इसकी कमर पर सजवटी अलंकरण किया गया है। एक और तीर्थंकर प्रतिमा जो शीर्ष रहित है। इस प्रतिमा में तीर्थंकर को नग्न दिखया गया है। इसने ध्यान मुद्रा व पद्मासन में बैठे हुए दिखाया गया है। तीर्थंकर की छाती पर वत्स चिह्न अंकित है। तीर्थंकर के आसन के नीचे जगह पर खाली जगह है। वहाँ पर संस्कृत भाषा में तीन पंक्तियां खोदी गई है। इस मूर्ति पर पंडित सूर्यकीर्ति का नाम अंकित है। जो कि सम्भवत: इस मूर्ति का दानकर्ता था । (19)

पिंजौर से जो प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं वह दिगम्बर सम्प्रदाय की है । श्वेताम्बर सम्प्रदाय से सम्बन्धित प्रमाण बहुत ही कम है। इस भाव के आधार पर कहा जा सकता है कि पिंजौर जैन धर्म का महत्त्वपूर्ण केंद्र रहा होगा।

रोहतक :

रोहतक

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

रोहतक यहाँ से हुई खोजों से हम इस क्षेत्र में स्थित अस्थलबोहर से जैन धर्म से सम्बन्धित पुरातात्त्विक अवशेष प्राप्त हुए है। अस्थलबोहर से ही पार्श्वनाथ की दो प्रतिमा प्राप्त हुई है।

इसमें एक मूर्ति में उसको पदमासन में ध्यान मुद्रा में बैठा हुआ दिखाया गया है तथा दूसरी खड़गासन रूप में है। तीर्थंकर की बैठी हुई प्रतिमा में उसे सिंहासन पर दिखाया गया है। प्रतिमा में तीर्थंकर के सिर के पीछे एक सुनहरा चक्र है। जो की कमल की पंक्तियों से सज्जित है। (20) प्रतिमा में बाएं और का भाग बहुत ही आकर्षक है। इस प्रतिमा में सात साधुओं को तपस्या करते हुए दिखाया गया है। रोहतक से जैन तीर्थंकर आदिनाथ की एक प्रतिमा मिली है। इस प्रतिमा में तीर्थंकर का पलाथी मारकर बेठे दिखाया गया है। (21) इस मूर्ति में तीर्थंकर की दोनों हाथों की हथेलियां ऊपर की और है। इसे पता चलता है कि यह ध्यान मुद्रा में है। तीर्थंकर के केश दोनों कन्धों पर है। इस मूर्ति में मध्य में दो नरों को त्रिभंग मुद्रा में खड़े हुए प्रदर्शित किया गया है। यह ऐसा प्रतीत होता है कि ये भरत व बाहुबली है। (22)

नारनौल :

एक प्रतिमा पार्श्वनाथ की महेन्द्रगढ़ के नारनौल जिले से मिली है। इस प्रतिमा में पार्श्वनाथ को ध्यानमुद्रा में दिखाया गया है। दो शेरों के बीच एक धर्म चक्र चित्रित है। प्रतिमा में तीर्थंकर की छाती पर श्रीवत्स चिह्न अंकित है। इस प्रतिमा में तीर्थंकर के सिर पर सात सर्पो के फनों को चित्रित किया गया है। तीर्थंकर के दोनों ओर चंवरधारी खड़े दिखाए गए है। इन्हें बाजू बंद व कंगन पहने दिखाया गया है। तीर्थंकर ने लम्बी वनमाला धारण की है। जो घुटनों तक लम्बी है। (23)

हांसी :

हांसी

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

हांसी हांसी नगर हरियाणा में हिसार से 24 कि०मी० पूर्व में दिल्ली-सिरसा राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। हिसार व फतेहाबाद सम्राट अशोक के स्तम्भों का मिलना यह प्रमाणित करता है कि यह पुरास्थल एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग पर स्थित है। महत्त्वपूर्ण व्यापारिक क्षेत्र होने के कारण यह क्षेत्र अरब देशों, रोम, गजनवी, सिरसा, हांसी व दिल्ली से जुड़ा हुआ था। (24) आधुनिक हांसी नगर के तीन नाम आशिक, आसिक, आसीगढ़ प्राचीन अभिलेखों में मिलते हैं। हांसी से कई मध्यकालीन लेख व अभिलेख भी प्राप्त हुए है। कहते हैं कि सन् 736 ई० में दिल्ली की नींव रखी गई थी। राजा अनंगपाल प्रथम के 5 पुत्रों में से उनके एक पुत्र द्रुपद ने यहाँ एक गढ़ की स्थापना की थी। यहाँ पर बने वाली तलवारें दूर-दूर तक प्रसिद्ध थी। इस तलवार की अरब देशों में भी मांग थी। तलवार का संस्कृत में असि कहा जाता है इसके नाम से गढ़ का नाम असिगढ़, फिर आसिका तथा अंत में हांसी हो गया। (25) हांसी में जैन धर्म के प्रभाव का पता साहित्यिक स्त्रोतों से चलता है। इन साधनों में खरतरगच्छबृहदगुर्वावलि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। (26) आचार्य जिनेश्वसूरि के बारे में भी जानकारी देता है। इसने हांसी का अपना स्थाई निवास स्थान बनाया था। इस स्थल पर जिनेश्वरसूरि ने अपने शिष्यों को जैन धर्म के प्रचार के लिए शिक्षित किया था। जिनेश्वसूरि ने हांसी में एक मठ की स्थापना की थी। इसके निर्देशन में बहुत से जैन मन्दिर बनाए गए थे। जो विधि-चैत्य कहलाये। (27)

यह ग्रंथ जिनेश्वरसूरि के शिष्यों ने हांसी को जैनधर्म और संस्कृति का मुख्य केंद्र बनाया था। इसके शिष्यों में जिनवल्लभ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण थे। इसके माता-पिता हांसी के ही रहने वाले थे। (28) आदिनाथ, महावीर व चैत्यालय मूर्तियाँ भी हांसी से ही प्राप्त हुई है। इसके अतिरिक्त हांसी से एक अज्ञात जैन देवता की मूर्ति प्राप्त हुई

है। जो बाएं हाथ में वस्तु पकड़े हुए है और झुलती हुई टांगों के साथ एक तिपाई पर बैठा है। इन प्रतिमाओं का यहाँ से प्राप्त होना इस बात का सूचक है कि यहाँ पर जैन धर्म काफी लोकप्रिय था। (29)

इस शोध-पत्र में हरियाणा में जैन धर्म के प्रमुख ऐतिहासिक जैन स्थलों के उपरोक्त विवरण से सिद्ध होता है कि जैन धर्म से संबंधित स्थल हरियाणा के अधिकांश हिस्से में फैले हुये हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संदर्भ सूची :

1. **जैन, कैलाशचन्द्र, जैन धर्म का इतिहास, भाग** - 3, **पृ०** 802.
2. **रायचौधरी, एच० सी०, पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ ऐशियण्ट इण्डिया**, 1953, **पृ०** 253.
3. **विद्यासागर, हिस्ट्री एण्ड आर्केओलोजी ऑफ सिरसा, एम, फिल्०, लघु शोध-प्रबंध**, 1984, **कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, पृ०** 36.
4. **भट्टाचार्य, बी० सी०, दी जैन आइकोनोग्राफी, पृ०** 86-87
5. **भट्टाचार्य, बी० सी०, पूर्वोद्धृत, पृ०** 67-68.
6. **शुक्ला, एस० पी०, स्कल्पचर्स एण्ड टैराकोटास् इन दी आर्कियोलॉजिकल म्यूजियम, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, पृ०** 53.
7. **डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स न्यू सीरिज, महाभारत वन पर्व क्रिटीकल संस्करण, पूना**, 81-16.
8. **अमर सिंह, आर्कियोलॉजी, ऑफ करनाल एण्ड जींद डिस्ट्रिक्ट पीएच० डी० थीसिस, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, पृ०** 21.
9. **वही, पृ०** 212.
10. **अमर सिंह, आर्कियोलॉजी ऑफ करनाल एण्ड जींद डिस्ट्रिक्ट, पीएच० डी० थिसीस**, 1981, **कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, पृ०** 211.
11. **अमर सिंह, पूर्वोद्धृत, पृ०** 212.
12. **कुमार मनमोहन, आर्कियोलॉजी ऑफ अम्बाला एंड कुरुक्षेत्र डिस्ट्रिक्ट, पीएच० डी० थीसिस, केयूके**, 1978, **पृ०** 2, **वी० एन० दत्ता, एच० एच० ए० फड़के, हिस्ट्री ऑफ कुरुक्षेत्र**, 1984, **पृ०** 156.
13. **शुक्ला, एस० पी०, पूर्वोद्धृत, पृ०** 49.
14. **जैन, जे० सी०, लाइफ इन एनशियन्ट इण्डिया एज डेपिक्टेड इन दी जैन कैनन्स, पृ०** 343.
15. **सिंह, यू० पी० पिंजौर, स्कल्पचर्स, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र** 1977, **पृ०**16-17.
16. **शुक्ला एस० पी०, स्कल्पचर्स एण्ड टेराकोटास् इन दी आर्कियोलॉजिकल म्यूजियम, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र**, 1983, **पृ०** 19.
17. **शुक्ला, एस० पी०, पूर्वोद्धृत, पृ०** 20-21.
18. **वही, पृ०** 36.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

19. शुक्ला एस० पी०, स्कल्पचर्स एण्ड टेराकोटास् इन दी आर्कलोजिकल म्यूजियम, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, 1983, पृ० 45-46.
20. जैन, जे० सी०, लाइफ इन ऐंशियंट इंडिया एज डिपिकटेड इन दी जैन, कैनन्स, पृ० 328.
21. भारत भूषण, कौशिक, प्राचीन रोहतक - एक पुरातात्त्विक अध्ययन, एम० फिल् कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, पृ० 351.
22. भारत भूषण, कौशिक, पूर्वोद्धृत, पृ. 36.
23. भट्टाचार्य, बी० सी०, दि जैन आइकोनोग्राफी, पृ० 96-97.
24. भण्डारकर लिस्ट नं. 329, प० 49, इण्डियन एन्टीक्वटी, XLI 17.
25. भूप सिंह राजपूत, सोविनयर आन होंसी, पृ० 6.
26. जिनपाल, खरतरगच्छबृहदगुर्वावलि, पृ. 8.
27. जिनपाल, दशरथ शर्मा, अर्ली चौहान डायनेस्टी, पृ० 233.
28. फड़के, एच० ए०, डिस्ट्रिक्ट जीन्द " ऐशियंट हिस्ट्री सेक्शन" हरियाणा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, न्यू सीरिज, पृ० 36.
29. आदित्य लोहान, " ए हिस्टोरिकलचरल स्टडी ऑफ दी हाँसी रिजन " पीएच० डी०, थीसिस, 1988, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, पृ० 53.